समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ जनवरी २०२२ ● वर्ष : २५ ● अंक : ७ (निरंतर अंक : २९५) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

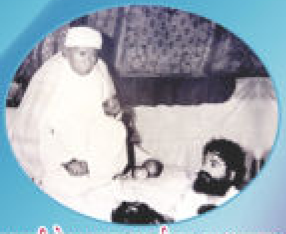

बापूजी ने गुरुपूजन कर ईश्वर-साक्षात्कार किया और समाज को उस रास्ते चलाया

बाल्यकाल में भक्ति के संस्कार देनेवाली अम्मा ने भी बापूजी के उस ईश्वरीय मार्ग का अनुगमन किया

आप माता-पिता, सद्गुरु और ईश्वर को जो भी देते हो वह अनंत गुना होकर आपके पास लौट आता है । इनका आदर अपना ही आदर है ।

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

मातृ-पितृ पूजन दिवस के प्रेरक पूज्य बापूजी का एवं माता-पिता का पूजन

परमात्म-प्रेम, आत्मिक शांति एवं संयम-सदाचार की महक विश्वभर में फैलानेवाले पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित

मातृ-पितृ पूजन दिवस (१४ फरवरी) है बेड़ा पार दिवस !

पहले हमें नहीं पता चला कि 'हमारी संस्कृति के लिए कौन लड़ रहा है ? कौन अपने पूरे तन-मन-धन से भारत को बचाने में, उसका आध्यात्मिक क्षेत्र विकसित करने में लगा है ?' मगर भारत को बरबाद करनेवाली विदेशी शक्तियों के कारण हमें पता चला कि आशारामजी बापू जैसे महानायक हैं जिन्होंने मूर्च्छित पड़े भारत को जगाने का काम किया है। ऐसे बापू को फँसाने का एकमात्र कारण है भारत को खत्म करना।

- श्री धनंजय देसाई, संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना

यह दिवस मना के विश्व को उन्नत करने का काम करें ५ | 'डॉक्टरों ने मना किया, हमने तो नहीं किया न !' १३ | जातकर्म संस्कार क्या और क्यों ! १२

परमात्मा पतियों के पति प्रजापति हैं १७ | औषधीय गुणों से भरपूर हल्दी १४

महान बनने का अचूक मार्ग : सत्संग

कुसंग का त्याग करिये । सर्वत्र, सदैव, सर्वथा दुष्टों की संगति से बचिये । उन्हीं संत-महापुरुष की शरण में जाइये जो ब्रह्मवेत्ता हों, जो आपके घावों को भर सकें, आपमें नवजीवन का संचार कर पायें, आपको आत्मशांति, आत्मानंद का मार्ग बता सकें।

विवेकानंदजी ने रामकृष्ण परमहंसजी का सत्संग किया और ज्ञानेश्वरजी ने निवृत्तिनाथजी का। गोरखनाथजी ने मत्स्येन्द्रनाथजी का सत्संग किया और साँई लीलाशाहजी ने स्वामी केशवानंदजी का। भगवदीय आत्माओं के दिव्य-अति दिव्य तेज, आध्यात्मिक स्पंदन और पवित्र विचारधाराएँ मन पर चुम्बक सरीखा विशेष प्रभाव डालते हैं। सत्संग तो मन को बड़ी ऊँचाइयों तक पहुँचाता है।

मोक्षप्राप्ति में ब्रह्मज्ञान के सत्संग का बड़ा हाथ रहता है। एक क्षण का सत्संग भी एक राज्य के शासन से श्रेष्ठ है। सत्संग से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। यह सांसारिक तथा बुरे विचारों को जड़ से उखाड़ फेंकता है और विषयी मन को आध्यात्मिकता की ओर मोड़ देता है। मोह का नाश करता है, वैराग्य उत्पन्न करता है, सत्पथ पर लगाकर मन में सद्ज्ञान का सूर्य उदय कर देता है। यदि ब्रह्मज्ञान का सत्संग मिल जाय तो तीर्थयात्रा की आवश्यकता ही नहीं। सत्संग स्वयं तीर्थों का तीर्थ है। जहाँ सत्संग है वहीं त्रिवेणी उपस्थित मानिये।

सत्संग जैसा प्रेरणादायक, शांतिदायक, उत्साहवर्धक और आनंददायक और कुछ है भी तो नहीं। मनुष्य को सबसे ज्यादा पवित्र करनेवाला और प्रकाश देनेवाला सत्संग ही तो है ! जो भी नियमपूर्वक सत्संग करते हैं उनमें ईश्वर, संत एवं शास्त्रों के प्रति श्रद्धा और भक्ति का विकास होने लगता है। सत्संग का फल सदैव अचूक होता है।

जिनके कानों में ब्रह्मवेत्ता संतों के प्राणदायक शब्द पड़ते हैं वे बुरे होने पर भी पवित्र हो जाते हैं और वे उन संत के बताये हुए मार्ग पर चलते हैं तो अंततोगत्वा परमात्मप्राप्ति कर मुक्त भी हो जाते हैं। इसी सत्संग के कारण दुर्जन जगाई-मधाई जैसे डाकुओं का भी जीवन परिवर्तित हुआ और वे महान संत बन गये। ऐसे तो अनेक उदाहरण हैं।

सदैव सत्संग करें। आपको इसके अकथनीय लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। जीवन अल्प है, समय निकलता जा रहा है। काल है कि आपको निगलने के लिए मुँह फाड़े खड़ा है। कल तो कभी आयेगा नहीं। मनुष्य-जन्म का पुनः मिल पाना कोई सुलभ नहीं। ब्रह्मवेत्ता संत-सद्गुरु के सत्संग द्वारा आत्मसाक्षात्कार का लाभ उठाकर इसी जन्म का सदुपयोग करिये।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २५ अंक :७ (निरंतर अंक : २९५)
प्रकाशन दिनांक : १५ जनवरी २०२२ मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २४ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

* Email: lokkalyansetu@ashram.org,
ashramindia@ashram.org
* Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- भक्ति के विघ्न..४
- भय-शोक कहाँ रहना पसंद करते हैं ?................५
- यह दिवस मना के विश्व को उन्नत करने का काम करें..........................६
- सच्चा ज्ञान क्यों नहीं होता ? - स्वामी अखंडानंदजी..................७
- अपने-आपको ही सुधार लो............................८
- पुण्यदायी तिथियाँ एवं योग...............................९
- भगवान के मिलने का फल क्या ?......................१०
- सुंदर से भी सुंदर..११
- सबकी ज्योति से मिलकर अपनी ज्योति जले........१२
- आत्मकल्याण चाहनेवाले क्या करते हैं ? - संत तुकारामजी.........................१३
- जातकर्म संस्कार क्या और क्यों ?....................१४
- 'डॉक्टरों ने मना किया, हमने तो नहीं किया न !'....१५
- औषधीय गुणों से भरपूर हल्दी......................... १६
- जब तक तू चाहे देख ले... - संत पथिकजी..........१७
- कला है तो उसे देनेवाले का धन्यवाद करो............१९
- परमात्मा पतियों के पति प्रजापति हैं..................२०
- तेरा सब कुछ है मंजूर.................................. २१

✻ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ✻ 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

✻ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✻ | **सेवाकार्य**

JK अराधना
रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

Mangalmay Digital | Asharamji Bapu | Asharamji Ashram
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

भक्ति के विघ्न

– पूज्य बापूजी

संत सुंदरदासजी ने कहा है :

प्रेम भक्ति यह मैं कही, जाने विरला कोय।
हृदय कलुषता क्यों रहै, जा घट ऐसी होय॥

प्रेमाभक्ति जिस हृदय में प्रकट होती है उस हृदय से दोष निवृत्त हो जाते हैं। प्रेम-रस नित्य नवीन रस है। तत्त्वज्ञान से शांत-रस में स्थिति होती है, भक्तिभाव से नित्य नवीन प्रेम-रस उभरता है। उसकी जितनी सुरक्षा की जाय उतना ही बढ़ता जाता है और अगर लापरवाह हो गये तो क्षीण हो जाता है।

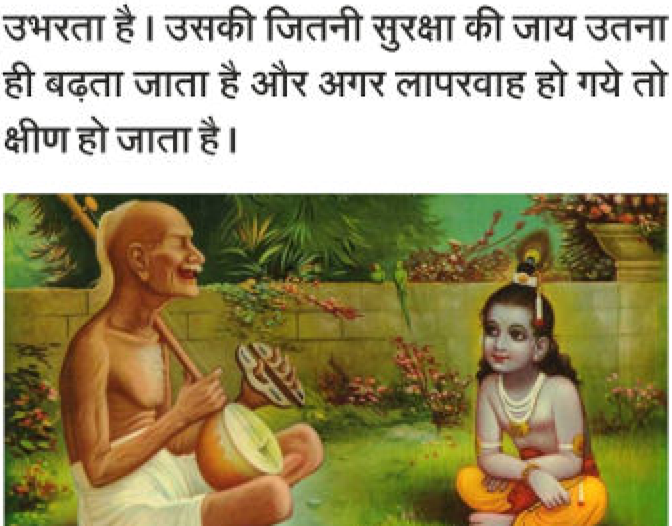

इस प्रेमाभक्ति में भगवद्-अनुसंधान का त्याग विघ्नरूप है। संसारी, भोगी, वासनावाले व्यक्तियों का संग भी भक्ति-रस क्षीण करनेवाला है। भक्त अगर अपनी भक्ति की सुरक्षा चाहता है तो उसे कुसंग और कुवृत्तियों का त्याग करना चाहिए।

भक्त के जीवन में ये पाँच बातें नहीं सुहातीं : ईर्ष्या, घृणा, भय, लज्जा और निंदा। जो भक्त अपने जीवन में से इन पाँचों को निकालने में लगता है उसकी भक्ति खिलती है, दृढ़ होती जाती है व नित्य नवीन रस प्रदान करती है।

अक्षर प्रेमी भक्त ईर्ष्यावृत्ति रखता है तो उसकी प्रेमाभक्ति क्षीण होती है। इसलिए चित्त से ईर्ष्या व घृणा को निकाल फेंके। इनको निकालने से प्रेमाभक्ति पुष्ट होगी।

चित्त से भय को भी निकाल दें। भक्ति के रास्ते जाना है तो थोड़ी हिम्मत जुटानी पड़ेगी। 'ऐसा नहीं करेंगे तो फलाना क्या कहेगा ? ऐसा व्यवहार

(मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी)

वेलेंटाइन डे मनाकर कुछ प्रेमी-प्रेमिका प्रेम-विवाह करते हैं, माँ-बाप की बातों को ठुकरा देते हैं और अपना ही सत्यानाश करते हैं । थोड़े दिन शादी चलती है, बाद में झगड़ते हैं, तलाक भी देते हैं।

ऐसे ही प्रेम-विवाह किये हुए एक दम्पती के घर

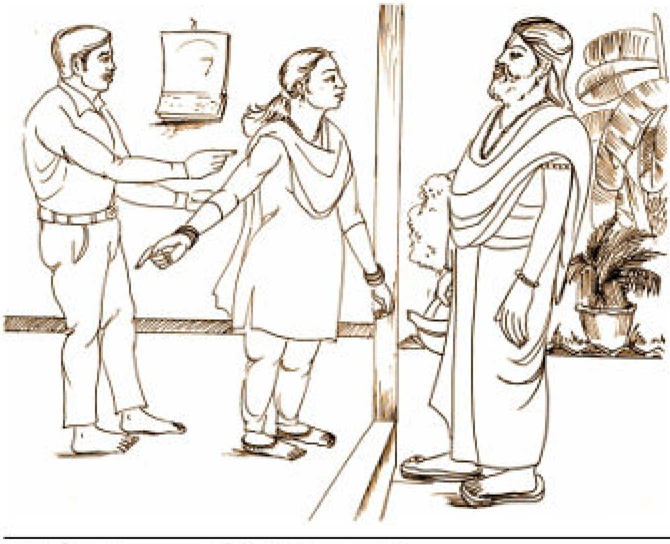

में झगड़ा हो रहा था । एक साधु बाबा भिक्षा लेने गये तो देखा कि इस घर में आग लगी है, झगड़ा हो रहा है।

पति बोलता है : ''तू तो ऐसी है... मैं तो बोलता था कि 'तू चन्द्रमुखी है' लेकिन तू अब सूर्यमुखी भी नहीं रही, ज्वालामुखी हो गयी ! मेरी जिंदगी बरबाद कर दी !''

पत्नी बोलती है : ''तू ऐसा है - वैसा है... मैंने मेरी माँ की बात नहीं सुनी, मेरी माँ को रोती हुई छोड़ के मैंने तेरे साथ शादी की । बाप की इज्जत को मिट्टी में मिला दिया, खानदान को मैंने पैरों तले कुचल डाला, मैं तेरे पीछे आयी ।...'' दोनों झगड़ रहे थे।

बाबाजी ने सोचा कि घर में पति-पत्नी एक-दूसरे पर अग्निवर्षा कर रहे हैं । बाहर की अग्नि होती तो अग्निशामक दल आकर उसे बुझा देता

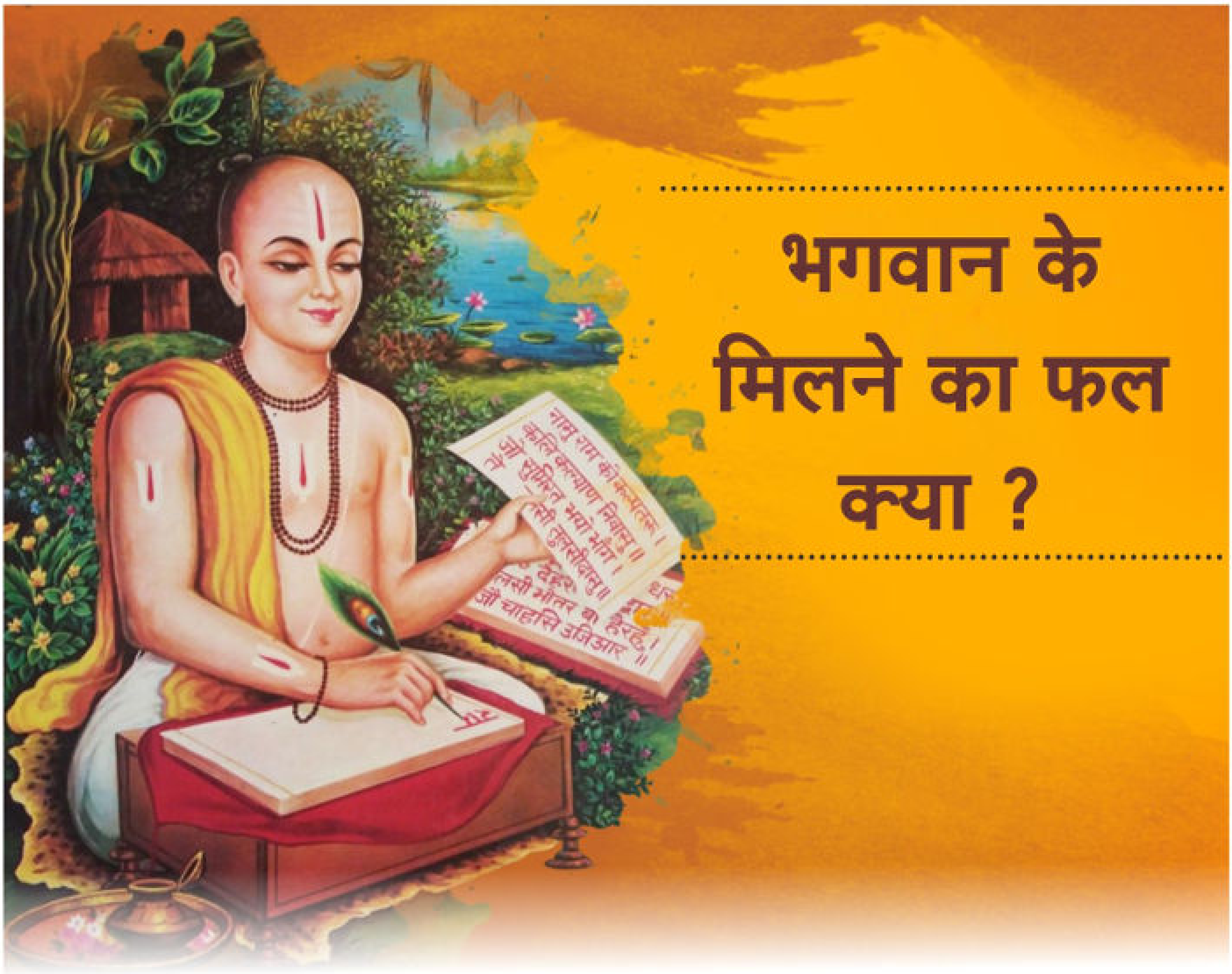

भगवान के मिलने का फल क्या ?

श्री रामचरितमानस (बा.कां. : २.४) में संत तुलसीदासजी सत्संग की महिमा बताते हुए कहते हैं :

बिनु सतसंग बिबेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।
सतसंगत मुद मंगल मूला ।
सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता । विवेक माने चीज को अलग-अलग करके समझना, जैसे हंस दूध और पानी को अलग कर देता है ऐसे । विवेक अच्छे और बुरे को, सत्य और असत्य को, धर्म और अधर्म को अलग-अलग कर देता है । लेकिन यह विवेक की शक्ति सत्संग में ही मिलती है ।

सत्संग कैसे मिले ?

एक तो सत्संग तब मिलता है जब व्यक्ति पुण्यात्मा हो, खूब पुण्य करे । तो यह पुरुषार्थ का काम हुआ । दूसरा है भगवान की जब कृपा होवे तब सत्संग मिलता है ।

भगवान की कृपा हो रही है यह कैसे समझें ?

जिस दिन सत्संग मिले, सत्संग में हमारी रुचि हो रही हो तो समझना भगवान की कृपा हमारे ऊपर हो रही है । बिना भगवान की कृपा के सत्संग सुलभ नहीं है । और यह जो सत्संगति है यह 'मुद मंगल मूला' है । मूल माने जड़ । सत्संग जो है वह जड़ है । किसकी जड़ है ? कि मुद मंगल - हृदय में इससे आनंद आता है और जीवन में इससे मंगल-मंगल हो जाता है । सत्संग करो, विश्वास करो, 'सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।' साधन जितने हैं, जप-तप बड़े-बड़े साधन हैं किंतु ये तो फूल हैं

जातकर्म संस्कार क्या और क्यों ?

सोलह संस्कारों में चौथा संस्कार है जातकर्म संस्कार । शिशु के जन्म लेने के बाद यह सबसे पहला संस्कार होता है । जन्म के बाद शिशु को शरीर, मन व बुद्धि से स्वस्थ रखने के लिए जो भी आवश्यक कर्म किये जाते हैं उन्हें जातकर्म संस्कार कहते हैं।

पूर्व समय में शास्त्रों के विधान के अनुसार शिशु के जन्म के पश्चात् १२ घड़ी (४.८ घंटे) से १६ घड़ी (लगभग साढ़े छः घंटे) के बाद ही नाल काटी जाती थी । इस बीच के समय में शिशु का जातकर्म संस्कार पूरा किया जाता था क्योंकि नाल-छेदन के बाद सूतक (जननाशौच) लग जाता है । इस संस्कार में मेधाजनन (शिशु को मेधावी बनाने हेतु घी-शहद के विमिश्रण को सोने की सलाई से चटाना), आयुष्यकरण (शिशु के दीर्घायुष्य हेतु उसके कान में पिता द्वारा मंत्रोच्चारण), जन्मभूमि की प्रार्थना, कुम्भ-स्थापना, अग्नि-स्थापना आदि करने के बाद ही नाल काटने का विधान था। परंतु समय बदलते ये सब विधान धीरे-धीरे विलुप्त होते गये और अब अस्पतालों में प्रसूति होने लगी । ऐसी स्थिति में युग-अनुरूप पथ-प्रदर्शन करते हुए इस संस्कार का लाभ पूज्य बापूजी हमें दिलाते हैं।

शिशु जन्मे तो क्या करें ?

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''शिशु जन्मे तो नर्स, डॉक्टर या दाई को कह दो कि तुरंत उसका नाभि-छेदन न करें। रक्त-प्रवाह घूमता है तब तक नाभि-छेदन करेंगे तो शिशु के गहरे मन में डर घुस जायेगा । फिर कर्नल, जनरल होने पर भी एक चुहिया पैरों में आये तो डर जायेंगे। ऋळीीों ळाींशीीळेप ळी ींहश श्रशीों ळाींशीीळेप. जन्म के समय जो भय घुस जाता है वह जीवनभर रहता है । शिशु जन्मे तो ४-५ मिनट तक उसका नाभि-छेदन न हो। बाद में भगवद्-सुमिरन करके

औषधीय गुणों से भरपूर हल्दी

प्राचीन काल से ही भोजन, घरेलू उपचार व आयुर्वेदिक औषधि के रूप में तथा मांगलिक कार्यों में हल्दी का उपयोग होता आ रहा है । हल्दी रक्तशुद्धिकर होने से शरीर के सभी अंगों पर कार्य करती है। यह यकृत (liver) को बलवान बनाती है। रस, रक्त, मेद व शुक्र धातुओं की शुद्धि का कार्य कर असंख्य रोगों से रक्षा करती है एवं शरीर का बल बढ़ाती है । हल्दी में कई प्रकार के जीवाणुओं को नष्ट करने तथा विष का नाश करने का सामर्थ्य पाया जाता है।

चरक संहिता में इसे 'विषघ्नी' व 'कुष्ठघ्नी' (त्वचा-रोगनाशक) कहा गया है । यह उत्तम कांतिवर्धक है। उष्ण होने से कफ-वातशामक और कड़वी होने से पित्तशामक भी है। हल्दी का प्रयोग मुख्यतः रक्त व त्वचा विकार, मधुमेह (diabetes) आदि प्रमेह, कृमि, सूजन तथा कफजन्य रोग जैसे - जुकाम, खाँसी, दमा, गला बैठ जाना आदि में किया जाता है। यह रक्त की वृद्धि करती है तथा रक्तस्राव को शीघ्र रोकती है। आमदोष (कच्चा रस) का पाचन करनेवाली होने से यह बुखार, दस्त, पेचिश व संग्रहणी में उपयोगी है। यह शीतपित्त (urticaria) में बहुत गुणकारी है । प्रसूति के पश्चात् गर्भाशय की शुद्धि व उसे बल देने के लिए हल्दी का सेवन अवश्य करना चाहिए । इससे माता का दूध भी शुद्ध हो जाता है।

सर्दियों में थोड़ी-सी कच्ची हल्दी नियमितरूप से लेना बहुत लाभदायक है। इससे कई बीमारियों से रक्षा होती है।

बाजारू मिलावटी हल्दी की अपेक्षा घर की पिसी हुई शुद्ध हल्दी का उपयोग करें। हल्दी के सूखे कंद पानी में उबालने से नर्म हो जाते है। फिर उन्हें सुखाकर ऊपर का छिलका उतार के पीस लिया जाता है।

पूज्य बापूजी के सत्संग से संकलित सत्साहित्य

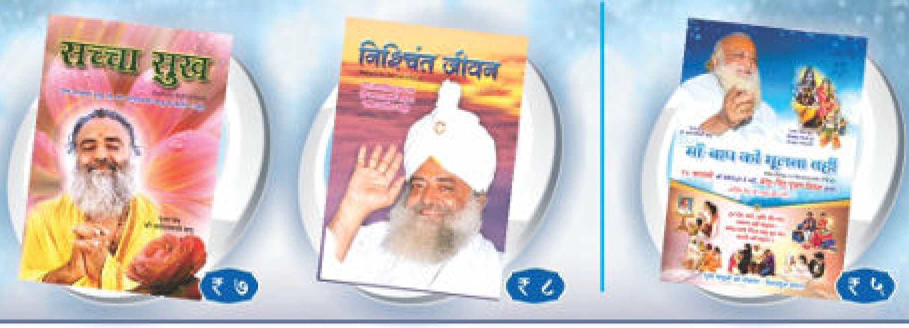

यह सत्साहित्य हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलुगु व अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है ।

पोषक तत्त्वों से भरपूर सेहत का खजाना

शायर खजूर

खजूर वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला है । यह शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, फाइबर्स आदि से भरपूर है । तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला यह खजूर रक्त, मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद है । इसका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं ।

उपरोक्त सभी गुणों से युक्त एवं विशेष मीठे, रसीले व मुलायम

कबकब खजूर (काले खजूर)

* रोगप्रतिरोधक व पाचन शक्तिवर्धक * यकृत (liver), हड्डियाँ आदि सभीके लिए बलप्रद * कब्ज आदि पेट की बीमारियों में अत्यंत हितकारी

एक श्रेष्ठ बल्य रसायन

अश्वगंधा चूर्ण व टेबलेट

ये सप्तधातु, विशेषकर मांस व वीर्य वर्धक एवं बल व पुष्टि वर्धक श्रेष्ठ रसायन हैं । ये स्नायुओं व मांसपेशियों को ताकत देते हैं, वात-शमन व कदवृद्धि करते हैं । धातु की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता आदि के लिए ये रामबाण औषधि हैं ।

शुद्ध हीरा भस्मयुक्त

वज्र रसायन टेबलेट

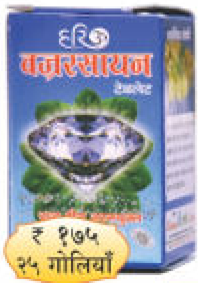

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़, तेजस्वी, कांतिमान तथा सुंदर बनानेवाली हैं । ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं । मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं । अस्थि व प्रजनन संस्थान हेतु विशेष लाभदायी हैं । कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं । ये हृदयरोग, लकवा (paralysis), सायटिका, संधिवात, कमजोरी, दमा, आँखों के रोग, गर्भाशय व मस्तिष्क संबंधी रोग आदि में शीघ्र लाभदायी हैं । नपुंसकता को दूर करने के लिए यह अद्वितीय औषधि है ।

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है । संक्रमण के प्रभाव से आनेवाली कमजोरी को दूर करने में सहायक है ।

होमियो तुलसी गोलियाँ

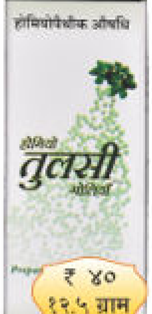

ये हृदयरोग, ऋतु-परिवर्तनजन्य सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी और खून की कमी, मधुमेह (diabetes), प्रजनन व मूत्रवाही संस्थान के रोगों में लाभकारी हैं ।

पंचरस

यह भूखवर्धक, पाचक, कृमिनाशक, हृदय के लिए हितकर अनुभूत रामबाण योग है तथा रोगप्रतिकारक शक्ति, स्फूर्ति व प्रसन्नता वर्धक है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

देश-विदेश के लोगों ने उत्साहपूर्वक मनाया लोक-मांगल्यकारी पर्व 'तुलसी पूजन दिवस'

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

विद्यालयों में हुए कार्यक्रम

जागृति यात्राएँ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।